डॉ. के. श्रीनिवासराव
सचिव
Dr. K. Sreenivasarao
Secretary

साहित्य अकादेमी
(राष्ट्रीय साहित्य संस्थान)
संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की स्वायत्तशासी संस्था
Sahitya Akademi
(National Academy of Letters)
An Autonomous Organisation of Government of India, Ministry of Culture

प्रेस विज्ञप्ति

साहित्य अकादेमी द्वारा प्रवासी साहित्य की अवधारणा और प्रगति की दिशाएँ विषय पर चर्चा

नई दिल्ली। 15 जुलाई 2022; साहित्य अकादेमी में आज साहित्य मंच कार्यक्रम के अंतर्गत प्रवासी साहित्य : अवधारणा और प्रगति की दिशाएँ विषय पर एक परिचर्चा का आयोजन किया। सर्वप्रथम माननीय राष्ट्रपति के ओएसडी (हिंदी) राकेश बी. दुबे ने अपनी बात रखते हुए कहा कि प्रवासी शब्द को हम महाभारत में भी पा सकते है और प्रवास कभी भी सुख का कारण नहीं रहा है। उन्होंने कई प्रवासी रचनाकारों की रचनाओं को प्रस्तुत करते हुए बताया कि वर्तमान में लगभग 180 देशों में प्रवासी भारतीय रह रहे हैं और उनकी कहानियाँ कहीं न कहीं प्रभावित करने वाली हैं। उन्होंने हाल में ही आई अपनी पुस्तक जोकि ब्रिटेन के प्रवासियों पर [redacted] है, का जिक्र करते हुए कहा कि जनसंचार माध्यमों में सबसे ज्यादा प्रवासी साहित्य का प्रचार ब्रिटेन में ही हुआ है। राकेश पांडेय ने कहा कि यह प्रसन्नता की बात है कि अब प्रवासी साहित्य का उल्लेख हर मंच पर प्रतिष्ठा के साथ किया जाने लगा है। उन्होंने प्रवासी साहित्य की अवधारणाओं को एक उचित परिभाषा में बाँधने के बारे में भी कहा। आगे उन्होंने कहा कि अभी भी कई अन्य देशों में प्रवासी साहित्य की खोज की संभावनाएँ हैं। प्रख्यात कवि एवं लेखक और कई विदेशी विश्वविद्यालयों में अध्यापन कर चुके सुरेश ऋतुपर्ण ने कहा कि प्रवासी साहित्य के लेखन में प्रवासी अनुभव ही केंद्र में होने चाहिए, न कि केवल वहाँ का प्रवास। कोई भी साहित्य तब तक ही जिंदा रहता है जब तक वह सृजनात्मकता की कसौटी पर खरा उतरता है। प्रवासी साहित्य के बारे में हमें यह अवधारणा छोड़नी पड़ेगी कि विदेश की धरती पर लिखा गया सभी साहित्य महान है। साहित्य अपने प्रतिमानों से ही महान और लोकप्रिय होता है। कार्यक्रम के अध्यक्ष केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल के उपाध्यक्ष अनिल शर्मा जोशी ने कहा कि यह उचित समय है कि जब हम प्रवासी साहित्य और प्रवासी साहित्यकारों के बारे में अपनी राय स्पष्ट कर लें। आगे चलकर [redacted] इनके बीच कोई भी वर्गीकरण करना उचित नहीं होगा। आगे उन्होंने कहा कि इस विषय पर शोध कर रहे छात्र–छात्राओं को भी प्रवासी परिवेश की झलक पाने के लिए उन देशों की यात्राएँ करनी चाहिए, जहाँ के प्रवासी साहित्य पर वह कार्य कर रहे हैं। कार्यक्रम के दौरान उपस्थित प्रवासी साहित्य के विशेषज्ञों नवीन लोहानी, राजेंद्र प्रसाद मिश्र ने भी अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम के दौरान भारी संख्या में लेखक, पत्रकार और विद्यार्थी उपस्थित थे।

के. श्रीनिवासराव

रवींद्र भवन, 35 फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली-110 001, दूरभाष : +91-11-2338 7064, 2307 3002, फैक्स : +91-11-2338 2428
Rabindra Bhavan, 35 Ferozeshah Road, New Delhi-110 001, Phone: +91-11-2338 7064, 2307 3002, Fax +91-11-2338 2428
E-mail: secretary@sahitya-akademi.gov.in, Website: http//www.sahitya-akademi.gov.in